(1)

Online class
Date – 30/5/2020
Time – 10:to 10:50 A.M.

Lecture Series No:- 58.

Dr. Sunita Kumari.
Department of Philosophy
B.A part - I
Paper - I (H.)
A.N.D. college Shahpur
Patory Samastipur.

Topic,

(1) Brahman,

Ans:→ शंकर का दर्शन भारतीय दर्शन को चमोत्कर्ष कहा जा सकता है। बादरायण के ब्रह्म-सूत्र का भाष्य शंकर ने कुछ ऐसे प्रकार प्रस्तुत किया है कि भारतीय दर्शन को एक अत्यंत ही सुदृढ़ तार्किक आधार मिला। शंकर के अनुसार एकमात्र ब्रह्म (Brahman) ही सत्य है। ब्रह्म को छोड़कर शेष सभी वस्तुएँ जैसे :→ जगत् ईश्वर आदि की सत्यता शंकर स्वीकार नहीं करते।

शंकर ने सत्ता को तीन कोटियों में विभाजित किया

P.T.O.

(1) पारमार्थिक सत्ता (2) व्यावहारिक सत्ता (3) प्रतिभासिक सत्ता।

ब्रह्म पारमार्थिक दृष्टिकोण से सत्य कहा जा सकता है। स्वयं ज्ञान है। प्रकाश की तरह ज्योतिर्मय होने के कारण ब्रह्म को स्वयं प्रकाश कहा गया है। ब्रह्म का ज्ञान उसके स्वरूप का अंग है।

ब्रह्म द्रव्य नहीं होने के बावजूद सब विषय का आधार है। यह दिक और काल की सीमा से परे है तथा कार्य-कारण नियम से भी यह प्रभावित नहीं होता।

शंकर के अनुसार ब्रह्म निर्गुण है।

उपनिषदों में ब्रह्म को सगुण और निर्गुण दो प्रकार का माना गया है। यद्यपि ब्रह्म निर्गुण है, फिर भी

ब्रह्म को शान्त नहीं कहा जा सकता। उपनिषद ने भी निर्गुण को गुण मुक्त माना है।

शंकर ब्रह्म को ही एकमात्र सत्य मानता है। तथा ब्रह्म के साक्षात्कार को ही जीवन का चरम लक्ष्य मानता है।

ब्रह्म से संसारिक ज्ञान का जो कि मूलतः अज्ञान है। अंत हो जाता है। जगत ब्रह्म का विवर्त मात्र है परिणाम नहीं। इस विवर्त से ब्रह्म प्रभावित नहीं होता है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार एक जादूगर अपने ही जादू से ठगा नहीं जाता है।

अविद्या के कारण ब्रह्म नाना रूपात्मक जगत के रूप में दृष्टिगत होता है।
ब्रह्म सभी प्रकार के भेदों से रहित है। वेदांती तीन प्रकार के भेद मानते होते हैं।

END